

गुजरात से हिंदी की सम्पूर्ण साहित्यिक त्रैमासिक पत्रिका

ISSN - 2347 - 8764



विश्व गाथा

वर्ष : 13 जुलाई-अगस्त-सितंबर 2026 अंक नंबर : 3

संपादक : पंकज त्रिवेदी



13
वर्ष

मुखपृष्ठ चित्र - बंसीलाल परमार

संपादकीय : पंकज त्रिवेदी - 03

*

आपके पत्र - 06 / 31/ 50 / 72

कहानी :

मीनू मीना सिन्हा - 07

डॉ. रजनीकांत - 11

श्यामल बिहारी महतो - 15

कल्पना गोयल - 20

विनय सिंह बैस - 22

राजेन्द्र कुमार सिंह - 26

डॉ. वीणा वीज 'उदित' - 29

संजीव जायसवाल 'संजय' - 32

डॉ. गोपालदास नायक - 37

पवन शर्मा - 39

कुंतल संजय भट्ट - 41

डॉ. शबनम आलम - 44

देववंश दुबे - 46

हास्य-व्यंग्य :

रमेश जोशी - 48

विवेक रंजन श्रीवास्तव - 49

यशवंत चौहान - 51

कविता :

अमित वाघेला 'काफ़ी' - 55

डॉ. सारिका मुकेश - 56

डॉ. जितेन्द्र प्रसाद माथुर - 57

बबिता कुमावत - 57

एम जोशी हिमानी - 58

कमला विद्यार्थी - 58

डॉ. शैलेश शुक्ला - 59

गुलज़ार - 72

बशीर बद्र - 73

संस्मरण :

सुधा गोयल - 52

शख्सियत :

वीरेंद्र बहादुर सिंह - 54

साक्षात्कार :

मधुर कुलश्रेष्ठ

डॉ. सतीश चतुर्वेदी 'शाकुन्तल' - 60

समीक्षा :

ब्रजेश कानूनगो- कुमार सिद्धार्थ - 64

डॉ. यशोधरा भटनागर

दीपक गिरकर - 66

डॉ. पारूल तोमर

दीपक गिरकर - 68

संदीप तोमर - पूजा अग्निहोत्री - 71

लघुकथा :

डॉ. मधु प्रधान - 10

रिंकी अग्रवाल - 14

डॉ. दलजीत कौर - 14

डॉ. पूरण सिंह - 19

डॉ. संजय रॉय - 25

अशोक गुजराती - 38

झकास :

धर्मपाल महेन्द्र जैन - 74

*

'विश्व गाथा' में सभी साहित्यकारों का स्वागत है। आप अपनी मौलिक रचनाएँ ही भेजें, साथ में अपना चित्र और परिचय भी। रचनाएँ भेजने से पहले, पूर्व अंकों का अवलोकन जरूर करें। प्रकाशित रचनाओं के विचारों का संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखक पर होगा। विवादित या अन्य सामग्री चयन अधिकार संपादक का होगा। प्रकाशित रचनाओं पर कोई पारिश्रमिक भुगतान नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित सामग्री रचनाकारों के निजी विचार हैं, संपादक या संपादन मंडल-प्रकाशक का उनसे सहमत होना बिल्कुल अनिवार्य नहीं है। यह अवैतनिक और अव्यावसायिक पत्रिका है।

*

© Editor, Printer & Publisher : Pankajbhai Amrutlal Trivedi , Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Owner by : Pankajbhai Amrutlal Trivedi, Printed at Nidhiresh Printery, 23, Medicare Complex, Nr. A-One Garage, Surendranagar. Published at Gokulpark Society, 80 Feet Road, Surendranagar-363002 (Gujarat) Jurisdiction : Surendranagar (Gujarat)

अपनी नज़र : 'विश्वगाथा' त्रैमासिक पत्रिका (अप्रैल-जून '2026)

अपने प्रत्येक अंकों की भांति 'विश्वगाथा' का यह अंक भी अपने स्तरीय, दिलचस्प और जानकारीयों से सुसज्जित है। सटीक आलेखों, कहानियों, लेखों, कविताओं और व्यंगों इत्यादि ने पत्रिका को पूर्ण विविधता प्रदान की है। इन सभी रचनाओं में से कुछ विशेष कथाओं ने स्मृति पटल में एक लंबी लकीर खींची है जिनके लिए मेरे द्वारा भी दो शब्द लिखे जाने जरूरी हो गए हैं।

कुछ कहानी लेख अत्यंत भावपूर्ण लगे उनमें से : -'हिंदी व्यंग स्तंभ लेखन की परंपरा...' आलेख ने व्यंग्य कारों और स्तंभ लेखकों का एक सरसरी तौर पर एक पूरा परिदृश्य खींच दिया है। साहित्य और पत्रकारिता से जुड़े पाठकों को अवश्य ही रुचिकर लगेगा क्योंकि इसे पढ़कर स्थापित, प्रसिद्ध और लोकप्रिय लेखकों की दिलचस्प रचनाओं का स्मरण हो जाएगा। किसी भी समाचार पत्र और पत्रिकाओं में नियमित स्तंभ होने से उसकी उपयोगिता, स्तंभ लिखने की कला और व्यंगकारों की कथन का उद्देश्य के बारे में जानकारी देना प्रशंसनीय है। पुराने, नए रचना कारों के नामों की एक लंबी जानकारी इस आलेख में मिलती है। श्री अरुण अर्णव खरे ने अच्छे तरीके से संकलित करके इसकी प्रस्तुति की है। स्वनामधन्य हरिशंकर परसाई जी की 'दानी' नमक व्यंग का इस अंक में होना एक सही उदाहरण सार्थक है।

किरीट दूधात की लिखी हुई '...बड़े ज़ोरों से मनवाया गया हूँ' एक जबरदस्त शख्सियत की जानकारी उपयोगी है, उनको श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनका परिचय उनके काव्य के लंबे शीर्षक और कविता की प्रस्तुति द्वारा की गई है। हमारी भी श्रद्धांजलि उस विद्वान कवि जिनका नाम विनोद कुमार शुक्ला, जो 2024 में ज्ञानपीठ पुरस्कार से नवाजे गए, अभिनंदन करता हूँ। किरीट जी ने अद्भुत तरीके से इसे लिखा भी है। जात पात और अगड़ी पिछड़े के भेद भाव को लेकर समाज में फैले विषमताओं पर सोच का निर्धारण करते हुए 'कबीरा खड़ा बाजार में' लेख शोफालिका सिन्हा ने लिखा है। कबीर और रहीम, इनके लिखे दोहों और उपदेशों को आदर्श कहते हुए समाज को इनकी महत्ता इस लेख में बताई गई है। 'यात्रा वृत्तांत' में इस अंक में 'वेल्लोर' के बारे में जानकारी दी गई है। कला कौशल द्वारा लिखित इस वृत्तांत में इसकी भौगोलिक, सामाजिक और धार्मिक आस्थाओं के विषय पर अच्छी चर्चा और विवरण है। पढ़ते हुए अच्छी जानकारी साझा की गई है लेकिन यह यात्रा वृत्तांत न लगकर कुछ निबंध के रूप में ज्यादा लगता है। ऐसा मुझे प्रतीत हुआ। "रिपोर्टाज" के अंतर्गत नमिता एस पांडेय की 'सासण गीर' के यात्रा के दौरान की चर्चा एक सकारात्मक अनुभव व रोमांच भर देता है। गुजरात के 'गिर' -जंगल के पहाड़ियों को लेकर इनके विवाह की मौलिक कथा के विषय में जानकारी, प्रकृति से जुड़ाव का सूचक है। जंगल में घूमने और संवाद करने का एक नियम है इसे पढ़ने पर इसकी जानकारी होती है और यह पता चलता है कि वास्तव में हम जंगल में मेहमान होते हैं।

एक जरूरी लेख इस अंक में प्रकाशित हुई है जिसे स्नेहा सिंह जी ने

लिखा है कि लोग निरर्थक बारंबार भावनात्मक सोच में पड़ कर अपना मानसिक संतुलन बिगाड़ लेते हैं। इससे मन में थकान, अशांत, भारीपन और बैचेनी हो जाती है जो एक शिक्षाप्रद लेख है। इसे पढ़ कर सभी को इस विषय पर मनन करते हुए चिन्तामुक्त होना चाहिए। हास्य व्यंग्य की सीढ़ियों से उतर कर दिल में प्रवेश करने वाली फारूक आफरीदी की कथा 'शिवशंकर पांडेय अभी तक क्यों जिंदा है' मौजूदा हालात को बयान करते प्रेरणास्पद लगी। 'मेरी विदेश यात्रा', नीलमणि जी की एक उत्सुकता से भरी दिलचस्प संस्मरण है जो नपे-तुले शब्दों का प्रयोग करते हुए पूरे भाव के साथ जानकारीयों देता है। डॉ. स्वाति चौधरी की एक व्यंग्य से भरी लघु कथा 'थूक का स्वाद' आजकल के साहित्य जगत की चाटुकारिता और लोभ का परिचय देता है।

डॉ. मनोहर अभय की कहानी 'अपने-अपने दर्द' महज कहानी नहीं एक गरीब, असहाय व्यक्ति की जीवन के उजड़ते 'घरोंदे' की कथा है जो आज भी हमारे देश के अस्पतालों और उनके स्टाफ से मिलती जुलती अनुभवों से मेल खाती है। सरकारी अस्पतालों के इसी प्रबंध और संसाधनों के कारण आज प्राइवेट अस्पतालों की लंबी कतारें लगी हुई हैं। 'इंतज़ार' महेश कुमार केशरी द्वारा लिखित एक कहानी है जो एक महिला के इर्द-गिर्द घूमती हुई उसकी जीवन के विभिन्न दशाओं, उसके निकटतम संबंधियों से लेकर सामाजिक संबंधों के लोगों, उसका ईमान, कर्तव्य और उसके विचारों से परिचय कराती है। गरीब-अमीर होना, एक अलग पक्ष है परंतु चरित्र से जुड़ा व्यक्तित्व जिसका एक अलग ही बल होता है इसकी भी एक झलक इस कहानी को पढ़ने से मिलती है। नारी उत्पीड़न और मानवता दोनों ही पुरुष समाज की कृत्यों का इस कहानी के तीक्ष्ण मोड़ हैं। 'मुहूर्त' लघुकथा पढ़कर यात्रा के दौरान सड़क मार्ग से जाते हुए ढाबे पर रुक कर चाय पीने का लुत्फ याद आ जाता है और जब सुन्दर सजे ढाबे पर पहुँच कर पता चले कि आज उसके ओपनिंग का मुहूर्त है तो कहना ही क्या। पहला ग्राहक भी होना तो भाग्य की बात होती है और वह जगह भी यादगार के तौर पर हो जाती है। पायल गुप्ता जी ने अच्छा लिखा है। कुछ रिश्ते वाकई खामोश होकर बी इतने गहरे होते हैं कि उनकी 'आवाज़' ऊपर से भले ही अनसुना किया जाए मगर उनकी खनक बेहद तीक्ष्ण होती है। महेन्द्र मद्देशिया द्वारा लिखित 'आवाज़' लघु कथा वहीं गूँज है जो मर्मस्पर्शी है। पत्रिका के, सभी स्तंभ के संबंधित सभी लेख अपने स्तर पर खरे उतरे हैं। विशेष पक्ष 'सम्पादकीय' में श्री पंकज जी ने इस बार देश की वर्तमान आर्थिक, सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों की गंभीरता को भांप कर एक आम नागरिक की सोच को उभारा है। जिसे न राजसत्ता की लालच है न धर्म का दिखावा करना है बल्कि वह भयभीत है विदेश में चल रहे युद्धों, समाज के नैतिक पतन, बाजार के भावों और गृह युद्ध की आशंका से जिसने आम जनजीवन को त्रस्त कर दिया है। समस्याएं गहरी होती जा रही हैं आम नागरिकों के जीवनयापन की। विचारणीय विषय जीवन यापन के लिए। इस अंक में प्रस्तुत रचनाओं के लिए उनके लेखकों को धन्यवाद। आदरणीय पंकज त्रिवेदी जी को उनके निरंतर परिश्रम और सजग प्रयास के लिए शुभकामनायें, अभिनंदन और धन्यवाद।

निशि नाथ झा 'अमोल'



सम्पादकीय

प्रेम से परमात्मा की ओर

पंकज त्रिवेदी

प्रेम! यह शब्द जितना प्यारा लगता है, उतनी ही भयानक इसकी परछाई है, क्योंकि इस शब्द के मूल अर्थ को समझाने से पहले कई भ्रामक अर्थ प्रेम के इस पवित्र शब्द को अछूत कर देते हैं और वहीं अर्थ भयानक सिद्ध होता है। प्रेम शब्द आदि-अनादिकाल से हमारी अभुभूति के शब्दकोश में अंकित है।

कालान्तर के साथ प्रेम की भाषा में निरंतर परिवर्तन होता है। उसकी अभिव्यक्ति भी बदलती है। प्रेम-शब्द को जानना, उसका अनुभव करना, समझना- यह सब प्रक्रिया जिंदगी के सफ़र का अनिवार्य हिस्सा है। इस प्रक्रिया में सब की अपनी-अपनी समझ होती है और इसकी मर्यादा में इसके विविध अर्थ भी। जन्म से मृत्यु तक प्रेम की प्रक्रिया चलती रहती है। कहीं नफ़रत या संघर्ष में भी मुख्यतः प्रेम शब्द की ज़िम्मेदारी ही होती है। इंसान को प्रेम मिले तब उसके कई प्रश्नों का हल अपने-आप हो जाता है। मगर कभी-कभी प्रेम के कारण ही इंसान के जीवन में ज़बरदस्त संघर्ष या परिवर्तन देखने को मिलता है। ऐसे मामले में दो पात्रों के बीच तीसरे पात्र की दखलअंदाज़ी कारण बनाती है। ऐसे समय प्रेम के लिए इंसान की पारस्परिक समर्पण की कसौटी होती है। इस कसौटी में से बहुत कम पार उतरते हैं।

प्रेम मिले तब तृप्ति का अनुभव सहज होना चाहिए। मगर ऐसा हमेशा नहीं होता। प्रेम के ऐश्वर्य की अनुभूति या परम सुख को प्राप्त करने से पहले अपेक्षा का अवरोध बुद्धि को भ्रष्ट कर देता है। इस कारण से प्रेम का ही कौमार्य भंग होता है और उसमें वासना के शैतान की बुद्धि की दखलअंदाज़ी बढ़ जाती है। इंसान प्रेम के शिखर तक तो पहुँच जाता है मगर वहाँ शिव की आराधना जितना तादात्म्य और पवित्रता रह नहीं पाती और इंसान वहीं से फिसल जाता है। चुलबुलापन उसके धैर्य को धराशायी कर देता है और परम की प्राप्ति तक पहुँचाने का संघर्ष करने के बावजूद निष्फलता की गहरी खाई में धकेल देता है।

सुबह जागते ही, तो आँगन के पेड़ पर से सैकड़ों पंछियों की चहचहाहट सुनाई देती है। सूर्य की किरणों की उष्मा को पाने का सदभाग्य मिलता है। प्रातः ओस से भीगी सड़क पर बेंटी का हाथ थामे स्कूल तक छोड़ने के बहाने मॉर्निंग-वॉक करना, उगते सूर्य के रंगीन मिज़ाज को अनुभव करना कितना अच्छा लगता है! किसी सुन्दर युवती को मॉर्निंग-वॉक करते देख, नज़रें मिलीं और किसी प्रकार की पहचान के बग़ैर दोनों के चहरे पर स्मित उभर आ जाएं तब पूरे दिन की ऊर्जा मिलने का आनंद प्रेमथैरपी ही है न !

प्रेम करने के बजाय प्रेम हो जाने की घटना में सात्विकता होती है।

उसमें ही सच्चाई है। प्रेम में विफलता मिले वह बात ही ग़लत है। जब प्रेम जाए तो वह प्रेम सफल और समर्पित ही होता है, उसमें अपेक्षा ही दुःख है, जिसे हम विफलता कहते हैं। जावेद अख्तर का एक शेर है -

उन चरागों में तेल ही कम था

क्यों गिला फिर हमें हवा से रहे

प्रेम का स्वरूप तो ज्योति जैसा है, वह स्वयं प्रकाशित है। प्रेम का अर्थ किसी अन्य के जीवन में समर्पित उजास फैलाने से है। वर्तमान में हमारी युवा पीढ़ी का प्रेम कितना छिछला है, यह कभी सोचा है? प्रेम की ज्योति प्रकट होते ही हम इच्छा और वासनाओं की जेब भरकर मानों उसे खरीदने निकले हों।

ऐसे समय इसके बीच में हम हाँफ जाते हैं। संघर्ष का स्थान जब आशंका ले लेती है तब प्रेम का महल कण कण में बिखर जाता है। इस जमाने का प्रेम दृष्टिभ्रम से होता है। दृष्टि कुरियर का कार्य करती है और बुद्धि डाकिये का! दृष्टि प्रेम की अभिव्यक्ति को देखती है, बुद्धि उसका पृथक्करण करके मन-हृदय तक जगत के सौन्दर्य को पहुँचाता है। प्रेम का अंतिम लक्ष्य कौन-सा? जगत का प्रत्येक इंसान इन सवालों में घिरा है। जावेद अख्तर के ही शेर को देखें -

अपनी महबूबा में अपनी माँ को देखें

बिन माँ के लड़कों की फ़िरत होती है।

जीवन का यह अत्यंत मार्मिक घाव है। जिन्होंने कभी भी मातृत्व का अनुभव नहीं किया है, ऐसे व्यक्ति को प्रेम की उष्मा का अभाव खटकता है। इंसान के स्वभाव के अनुसार जो सुख मिला है उस के बदले जो नहीं मिला है उसे प्राप्त करने की तीव्रतम बेचैनी ज़्यादा जोखिम वाली होती है। महबूबा में मातृत्व की खोज करते प्रेमी को उसकी प्रेमिका जब समझ न पाए तब विफलता की बात आती है। ऐसे प्रेमियों को दैहिक संबंधों में कम रूचि होती है और आश्रय या ऊष्मा की अपेक्षा ज़्यादा होती है। यह पूरी प्रक्रिया मनोवैज्ञानिक है। ऐसे कारण से कईयों के दाम्पत्यजीवन को टूटते हुए देखा गया है। ऐसा प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास अपेक्षाएँ रखता है कि उनका प्रेरणादायी साथ हो और वात्सल्यभाव भी हो! हकीकत तो यह है कि "प्रेम से परमात्मा" की यात्रा यहीं से शुरू होती है।

उसके पीछे यह अर्थ है कि प्राण से प्रकृति तक की यात्रा में मैं तुम्हारे साथ हूँ। शब्द के बदले अपने हृदय की भावनाओं से अभिव्यक्त होने की बात है। प्रेम सिर्फ एक शब्द नहीं है, एहसास है। क्या ऐसे संकल्प के साथ जी पाएंगे?

*

अंत में - लोकतंत्र में कोई राजा अगर पूर्व राजाओं के दिन गिनने लगे, माथे पर मुकुट पहनने लगे तो मान लीजिए आपका देश उनके हाथों में जा रहा है, जहाँ आपकी किसी भी प्रकार की अभिव्यक्ति को देशद्रोह माना जाएगा और आप देश के नागरिक नहीं बल्कि गुलाम बनने जा रहे हैं।